अथ सप्तमोऽध्यायः

ज्ञानविज्ञानयोग
(श्रीभगवान् का ज्ञान)

श्रीभगवानुवाच।
मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु।।१।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **मयि**=मुझ में; **आसक्तमनाः**=आसक्त मन वाला; **पार्थ**=हे पृथापुत्र अर्जुन; **योगम्**=स्वरूप-साक्षात्कार; **युञ्जन्**=अभ्यास करता हुआ; **मदाश्रयः**=मेरे भक्तिभाव (कृष्णभावना) के परायण; **असंशयम्**=निःसन्देह; **समग्रम्**=पूर्ण रूप से; **माम्**=मुझे; **यथा**=जिस प्रकार; **ज्ञास्यसि**=जानेगा; **तत्**=वह; **श्रृणु**=श्रवण कर।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे पार्थ (अर्जुन)! मेरे भक्तिभाव से युक्त होकर मुझमें आसक्त मन के द्वारा योगाभ्यास करने से तू मुझे निःसन्देह जिस प्रकार पूर्णरूप से जानेगा, उसका श्रवण कर।।१।।

तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता के इस सातवें अध्याय में कृष्णभावनामृत के स्वरूप का पूर्ण निरूपण है। भगवान् श्रीकृष्ण में सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का परिपूर्णतम प्रकाश है। इस अध्याय में उनके द्वारा अपने ऐश्वर्य के प्रकटीकरण का वर्णन है। इसके अतिरिक्त, श्रीकृष्ण की ओर आकृष्ट होने वाले चार प्रकार की सुकृतियों और कभी न कृष्णोन्मुख होने वाले चार प्रकार के दुर्जनों का उल्लेख भी है।